।। बुजुर्ग जीवन की लघुकथाएं का लोकार्पण ।।

इंदौर/नई पीढी बुजुर्गो की भावनाओं को समझे और उनका सम्मान करे,दोनों के बीच संघर्ष हो यह अनिवार्य नही ।सामंजस्य में ही जीवन का सच्चा सुख है । वृद्धों की भी अलग–अलग श्रेणियां होती है । वृद्धावस्था और बुजुर्गियत में अन्तर है । हर वृद्ध बुजुर्ग हो यह जरूरी नहीं । ये उद्गार वरिष्ठ लघुकथाकार बलराम अग्रवाल,दिल्ली ने सुरेश शर्मा द्वारा सम्पादित लघुकथा संकलन की पुस्तक बुजुर्ग जीवन की लघुकथाएं के लोकार्पण –अवसर पर अपने उद्बोधन में व्यक्त किये । समारोह कथा–मंच द्वारा मध्य भारत हिन्दी साहित्य समिति,इंदौर के सभाकक्ष में आयोजित किया गया था ।

प्रमुख अतिथि सूर्यकान्त नागर ने कहा कि जीवन में सब कुछ नकारात्मक नही है सकारात्मक भी बहुत है । असंवेदनशील नई पीढी के वृद्धों के प्रति दुर्व्यवहार की कथाओं के स्थान पर यदि सकारात्मक सोच की लघुकथायें लिखी जायेगी तो उनसे उर्जा–उत्साह तो मिलेगा ही कुछ बेहतर करने की प्रेरणा भी मिलेगी । हम बुजुर्गों को बोझ न समझे । पितृ सत्तात्मक संयुक्त परिवार के कुछ दोष है तो उसके सकारात्मक पहलू भी कुछ है।

विक्रम विश्वविद्यालय,उज्जैन के प्राध्यापक डां.शैलेन्द्र शर्मा ने अपने विस्तृत वक्तव्य में कहा कि आज परिवार में बालक और बुजुर्ग दोनों उपेक्षित है । दादा की जितनी पोते से पटती है,उतनी अपने पुत्र से नहीं । जनरेशन गेप को समझाना जरूरी है । लघुकथा में सांकेतिकता जरूरी है । वहां अनावश्यक विस्तार विवरणात्मकता और स्पष्टीकरण की गुंजाईश नही होती ।

सुरेश शर्मा ने पुस्तक प्रकाशन की अपनी योजना पर प्रकाश डाला और उन सबके प्रति आभार व्यक्त किया, जिन्होने कृति को मूर्तरूप देने में सहयोग किया । उन्होने बताया कि संकलन में देश के 77 लघुकथाकारों का 125 लघुकथायें शामिल है ।

कथा–मंच के सचिव,नन्दलाल भारती ने कहा कि सुरेश शर्मा,परोपकारी, जिम्मेदार एंव संवेदनशील युवा–बुजुर्ग हैं,जिनका उद्देश्य साहित्य के माध्यम से समाज सेवा करना है । इसी उद्देश्य का मूर्तरूप यह कथा संकलन बुजुर्ग जीवन की लघुकथाएं है। यकीन है कि यह लघुकथा संकलन बुजुर्गों के सुख–दुख से साक्षात्कार करवाकर युवा पीढी के मन में उनके प्रति संवेदना जागृत करेगा तथा बुजुर्ग भी नई पीढी के साथ सहयोगात्मक रूख अपनाएंगें । यह लघुकथा संकलन युवा पीढी एवं बुजुर्गो के बीच सेतु का काम करेगा । कार्यक्रम का संचालन ज्योति जैन ने किया और काव्यात्मक आभार कवि प्रदीप नवीन ने माना ।

नन्दलाल भारती
सचिव
कथा–मंच,इंदौर